

डॉ. डेविड एल. मैथ्यूसन, न्यू टेस्टामेंट थियोलॉजी, सत्र 29, ईसाई और पुराने नियम का कानून

© 2024 डेविड मैथ्यूसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डेव मैथ्यूसन द्वारा न्यू टेस्टामेंट थियोलॉजी पर व्याख्यान श्रृंखला है। यह सत्र 29 है, ईसाई और पुराने नियम का कानून।

हमने पिछले सत्र की शुरुआत या हमने पिछले सत्र का समापन जेम्स और जेम्स द्वारा आज्ञाकारिता पर जोर दिए जाने को देखकर किया था।

पूरी किताब में याकूब ने अच्छे कामों और आज्ञाकारिता की ज़रूरत पर बहुत ज़्यादा ज़ोर दिया है। एक तरह से, याकूब में आपको पॉल के पत्रों में पाए जाने वाले विस्तृत धार्मिक विकास और चिंतन का बहुत कम हिस्सा मिलता है। इसका मतलब यह नहीं है कि याकूब में कोई धर्मशास्त्र नहीं है।

इसका मतलब सिर्फ़ इतना है कि याकूब को इसके व्यावहारिक परिणामों में ज़्यादा दिलचस्पी है और वह अच्छे कामों और आज्ञाकारिता पर ज़ोर देता है। शायद इस मामले में सबसे महत्वपूर्ण पाठ याकूब का अध्याय 2 और आयतें 14-26 हैं। आयत 14 से शुरू करते हुए, मेरे भाइयों, इससे क्या फ़ायदा? मैं पूरी बात नहीं पढ़ूँगा, बल्कि इसके कुछ अंशों को पढ़ूँगा; मेरे भाइयों और बहनों, इससे क्या फ़ायदा अगर कोई व्यक्ति विश्वास का दावा करता है लेकिन उसके कोई कर्म नहीं हैं? क्या वह विश्वास उन्हें बचा सकता है? मान लीजिए कि कोई भाई या बहन बिना कपड़ों और रोज़ाना के खाने के बिना है; अगर तुम में से कोई उनसे कहे, शांति से जाओ, गर्म रहो और खाना खाओ, लेकिन उनकी शारीरिक ज़रूरतों के बारे में कुछ न करो, तो इससे क्या फ़ायदा? उसी तरह, अगर विश्वास के साथ कर्म न हों, तो वह मरा हुआ है।

कुछ उदाहरण देने के बाद, श्लोक 20, हे मूर्ख व्यक्ति, क्या तुम इस बात का प्रमाण चाहते हो कि कर्मों के बिना विश्वास बेकार है? वह अब्राहम के जीवन से एक उदाहरण, राहाब के जीवन से एक उदाहरण और पुराने नियम के दो उदाहरण देता है। फिर वह श्लोक 24 में समाप्त होता है, यह कहते हुए कि एक व्यक्ति अपने कर्मों से धर्मी या धर्मी माना जाता है, न कि केवल विश्वास से। अब, यह वह पाठ है जिसने अक्सर याकूब और पौलुस के बीच टकराव पैदा किया है, कम से कम कुछ लोगों के दिमाग में, जबकि गलातियों में, मौखिक रूप से भी, याकूब और पौलुस जो कहते हैं, उसमें एक औपचारिक विरोधाभास प्रतीत होता है। गलातियों 2.16 में पौलुस कहता है कि हम जानते हैं कि एक व्यक्ति व्यवस्था के कामों से नहीं बल्कि यीशु मसीह में विश्वास से धर्मी ठहराया जाता है।

अब आपके पास अध्याय 2, श्लोक 24 में जेम्स का कथन है कि एक व्यक्ति केवल विश्वास से नहीं बल्कि कर्मों से धर्मी ठहराया जाता है। NIV गलातियों 2 और यहाँ उन दो श्लोकों के बीच बहुत करीबी मौखिक समानता को अस्पष्ट करता है, लेकिन जब कोई उन्हें पढ़ता है, तो ऐसा लगता है

कि वे एक तरह से एक दूसरे के विपरीत हैं। अब, मैं जो नहीं करना चाहता वह यह है कि जेम्स को पॉल के संस्करण की तरह पेश किया जाए जैसे कि यह पॉल का जेम्स संस्करण है।

मुझे लगता है कि मार्टिन लूथर और रिफॉर्मेशन की विरासतों में से एक यह है कि हमने पॉल के पत्रों, खास तौर पर गलातियों और रोमियों के लेंस के माध्यम से पूरे नए नियम को पढ़ना सीखा है। जेम्स और कुछ अन्य छोटी किताबें, क्योंकि वे नए नियम के अंत में आती हैं, हाशिये पर धकेल दी जाती हैं। अक्सर, हम जो करते हैं वह यह है कि उन्हें पॉल के जेम्स संस्करण या पॉल के जॉन संस्करण, जूड के संस्करण या पॉल के पीटर के संस्करण की तरह लग रहा है।

मैं ऐसा नहीं करना चाहता। मैं जेम्स को जेम्स ही रहने देना चाहता हूँ। हालाँकि, नए नियम के व्यापक विहित संदर्भ में, मुझे लगता है कि यह सही है। आखिरकार, यह सवाल पूछना ज़रूरी है कि व्यापक विहित संदर्भ में दोनों पुस्तकें एक दूसरे से कैसे संबंधित हैं।

सबसे पहले, मैं आपको सुझाव दूंगा कि पॉलिन साहित्य के सर्वेक्षण, नैतिकता और आज्ञाकारिता पर पॉल की शिक्षा को देखते हुए, मुझे लगता है कि यह स्पष्ट हो जाता है कि पॉल ने भी सोचा था कि कार्य विश्वास का अपरिहार्य परिणाम थे, इफिसियों 2.8-10। यह पहचानना अभी भी शायद आवश्यक है कि पॉल और जेम्स इसे बिल्कुल उसी तरह से नहीं देखते हैं, या वे इसे बिल्कुल उसी तरह से नहीं कहते हैं और बिल्कुल उसी तरह से चर्चा नहीं करते हैं। शायद इसका कुछ हिस्सा उन अलग-अलग स्थितियों से जुड़ा है जिन्हें वे संबोधित कर रहे हैं। लेकिन मुझे लगता है कि जिस तरह से, और मुझे लगता है कि सबसे पहले, हमें यह पहचानने की ज़रूरत है कि भले ही वे चीजों पर ज़ोर दे सकते हैं और जेम्स को पॉल या पॉल को जेम्स जैसा बताए बिना चीजों को अलग-अलग तरीके से व्यक्त कर सकते हैं, जो हम करने के लिए कम प्रवृत्त होते हैं, यह समझना महत्वपूर्ण है कि दिन के अंत में, वे असहमत नहीं हैं क्योंकि पॉल भी समझता है कि आज्ञाकारिता नई वाचा से संबंधित होने और नई सृष्टि के रूपांतरित जीवन का अनुभव करने का अपरिहार्य परिणाम है।

इसलिए, आज्ञाकारिता इसका एक परिणाम है। याकूब यह भी स्पष्ट करता है कि आज्ञाकारिता बिल्कुल आवश्यक है, और इसके बिना, विश्वास मरा हुआ है, और विश्वास बचाने में असमर्थ है। वास्तव में, वह विश्वास की उस भाषा का उपयोग करता है, विश्वास कार्यों के साथ मिलकर काम करता है या विश्वास अपने द्वारा किए गए कार्यों से परिपूर्ण होता है।

लेकिन मुझे लगता है कि मुख्य बात यह है कि जेम्स और पॉल द्वारा संबोधित विभिन्न स्थितियों पर ध्यान दिया जाए, और नए नियम के कैनन के भीतर उनके कार्य और भूमिका का वर्णन करने के अन्य तरीके भी हैं। लेकिन मुझे लगता है कि शुरुआती बिंदु जेम्स और पॉल द्वारा संबोधित विभिन्न पादरी स्थितियों पर ध्यान देना है। पॉल गलातियों और रोमियों दोनों में एक ऐसी स्थिति को संबोधित कर रहे हैं जहाँ यहूदी ईसाइयों को मूसा के कानून के अधीन रहने की आवश्यकता होती है और यह एक प्रदर्शन है कि वे ईश्वर के सच्चे लोग हैं।

उनसे कहा जा रहा है कि वे परमेश्वर के सच्चे लोगों के रूप में पहचान करें, पुरुष खतना के लिए मूसा की व्यवस्था, सभी के लिए, सब्त की आवश्यकताओं और भोजन के नियमों को अपने ऊपर

लेकर यह संकेत दें कि वे परमेश्वर के सच्चे लोग हैं। उस संदर्भ में, पौलुस कहता है कि नहीं, आप न्यायसंगत हैं, आप परमेश्वर के सामने धर्मी घोषित किए गए हैं, और आपके पास परमेश्वर के सामने सही स्थिति है जो केवल यीशु मसीह में विश्वास पर आधारित है और व्यवस्था के कार्यों को अपने ऊपर लेने से नहीं। हालाँकि, याकूब में, स्थिति इसके ठीक विपरीत है।

ध्यान दें कि याकूब आयत 15 और 16 में क्या कहता है। मान लीजिए कि कोई भाई या बहन बिना कपड़ों और रोज़मर्रा के खाने के बिना है। अगर तुम में से कोई उनसे कहे, शांति से जाओ, गरम रहो और अच्छी तरह खाओ, लेकिन उनकी शारीरिक ज़रूरतों के बारे में कुछ न करो, तो इससे क्या फ़ायदा? दूसरे शब्दों में, याकूब ऐसी स्थिति को संबोधित कर रहा है जहाँ लोग विश्वास करने का दावा करते हैं, फिर भी जब वे किसी को बहुत ज़रूरत में देखते हैं, तो वे उसके बारे में कुछ भी करने से इनकार कर देते हैं।

बाद में, वह अध्याय 2 की शुरुआत में उन लोगों का वर्णन करता है जो धन संचय करते हैं, जो गरीबों पर अत्याचार करते हैं, और जो गरीबों के साथ दूसरे दर्जे के नागरिक जैसा व्यवहार करते हैं। जो लोग हाशिए पर पड़े लोगों और गरीबों पर अत्याचार करते हैं, वे अभी भी यीशु मसीह के व्यक्तित्व में विश्वास करने का दावा करते हैं। इसलिए, याकूब आगे कहता है, मुझे अपना विश्वास कर्मों के बिना दिखाओ। मैं अपने कर्मों से अपना विश्वास दिखाऊंगा। श्लोक 19, तुम विश्वास करते हो कि एक ईश्वर है, अच्छा; यहाँ तक कि दुष्टात्माएँ भी उस पर विश्वास करती हैं, और वे काँपते हैं।

तो, जेम्स एक ऐसे विश्वास को संबोधित कर रहे हैं जो इस तथ्य को स्वीकार करता है कि ईश्वर एक है, ईश्वर में एक ऐसा विश्वास जो जीवन में बदलाव नहीं लाता। एक प्रशंसित विश्वास जो अच्छे कामों, विशेष रूप से गरीबों के प्रति दान के कामों के साथ नहीं है। एक ऐसी स्थिति को संबोधित करते हुए जहाँ लोग विश्वास करने का दावा करते हैं, फिर भी जब वे किसी को सख्त ज़रूरत में देखते हैं, तो वे बस आँखें मूंद लेते हैं और इसके बारे में कुछ भी करने से इनकार कर देते हैं।

इस संदर्भ में, जेम्स पूछता है कि विश्वास आपको कैसे बचा सकता है। श्लोक 26, जैसे आत्मा के बिना शरीर मरा हुआ है, वैसे ही कर्मों के बिना विश्वास मरा हुआ है। इसलिए, उस अर्थ में, एक व्यक्ति को उसके कर्मों से धर्मी माना जाता है, न कि केवल विश्वास से। ऐसे विश्वास से नहीं जो केवल इस तथ्य की मौखिक स्वीकृति है कि ईश्वर एक है, बल्कि ऐसा विश्वास जो वास्तव में किसी को प्रेरित करता है और गरीबों और हाशिए पर पड़े लोगों तक पहुँचने और उनकी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए प्रेरित करता है।

इसलिए, मुझे लगता है कि जेम्स और पॉल के बीच अंतर को समझने का एक हिस्सा उन विभिन्न स्थितियों को समझना है जिन्हें वे पादरी के रूप में संबोधित करते हैं। इसलिए अंततः, मुझे लगता है कि हमें अब तक नए नियम में जेम्स और पॉल की चर्चा से यह निष्कर्ष निकालना चाहिए कि मुझे नहीं लगता कि हम नए नियम में विश्वास और कार्यों के बीच कोई संघर्ष देखते हैं, बल्कि इसके बजाय, सच्चा उद्धार करने वाला विश्वास जो हमें एक नई रचना में मसीह के साथ एकता में रखता है और नए वाचा के तहत जो हमारे दिलों में लिखे गए ईश्वर के कानून और पवित्र आत्मा का वादा करता है, अनिवार्य रूप से अच्छे कामों को उत्पन्न करेगा। वह विश्वास जो अच्छे कामों

को उत्पन्न नहीं करता है और वह विश्वास जो अच्छे कामों के साथ नहीं है, परिभाषा के अनुसार, सच्चा उद्धार करने वाला विश्वास नहीं है।

इसलिए, सवाल यह नहीं है कि हम विश्वास से या कामों से बचाए जाते हैं। सवाल यह है कि सच्चे उद्धारक विश्वास की प्रकृति क्या है? और मैं पॉल और जेम्स दोनों के लिए तर्क दूंगा, शायद जेम्स के लिए और भी अधिक, विश्वास नए वाचा और नई सृष्टि के एक परिवर्तित जीवन को जन्म देता है। अंततः, पॉल और जेम्स संघर्ष में नहीं हैं; हालाँकि, उनके जोर या चीजों को व्यक्त करने या चीजों को करने के तरीके अलग-अलग हैं। अंततः, नए नियम के भीतर, हमें उन्हें संघर्ष में नहीं देखना चाहिए, लेकिन दोनों इस बात पर सहमत हैं कि सच्चा उद्धारक विश्वास जो हमें मसीह से जोड़ता है, अनिवार्य रूप से आज्ञाकारिता के अच्छे कार्यों द्वारा चिह्नित और उसके साथ होता है।

जैसा कि थॉमस श्राइनर ने अपने नए नियम के धर्मशास्त्र में कहा है, ईश्वर में विश्वास गतिशील है और फल उत्पन्न करता है, और यदि फल की कमी है, तो यह सवाल उठाता है कि क्या वह विश्वास वास्तविक है। पहले यूहन्ना, दूसरे तथाकथित सामान्य पत्र पर आगे बढ़ते हैं। 1 यूहन्ना के पास आज्ञाकारिता की प्रतिक्रिया के बारे में कहने के लिए बहुत कुछ है।

अध्याय 2 और आयत 3 से 6 में हम जानते हैं कि अगर हम उसकी आज्ञाओं का पालन करते हैं तो हम उसे जान गए हैं। इसलिए, उसकी आज्ञाओं का पालन करना इस बात का सबूत या प्रमाण है कि हम परमेश्वर को जानते हैं और खुद परमेश्वर के उद्धारकारी ज्ञान में प्रवेश कर चुके हैं। जो कोई कहता है कि मैं उसे जानता हूँ, लेकिन वह जो आज्ञा देता है, वह नहीं करता, वह झूठा है, और उस व्यक्ति में सच्चाई नहीं है।

लेकिन अगर कोई उसके वचन का पालन करता है, तो उसमें परमेश्वर के लिए प्रेम सचमुच पूर्ण हो जाता है। इसी से हम जानते हैं कि हम उसमें हैं। जो कोई भी उसमें रहने का दावा करता है, उसे यीशु के जैसा जीना चाहिए।

बाद में, उसी अध्याय की 29वीं आयत में, यदि आप जानते हैं कि वह धर्मी है, तो आप जानते हैं कि हर कोई जो धर्मी काम करता है, वह उससे पैदा हुआ है। अध्याय 3 और आयत 6 में, कोई भी व्यक्ति जो मसीह में रहता है, पाप नहीं करता। कोई भी व्यक्ति जो पाप करता है, उसने न तो उसे देखा है और न ही उसे जाना है।

श्लोक 9, यह अध्याय 3 है, कोई भी व्यक्ति जो परमेश्वर से जन्मा है, पाप नहीं करेगा क्योंकि परमेश्वर का बीज उनमें रहता है। वे पाप नहीं कर सकते क्योंकि वे परमेश्वर से जन्मे हैं। अब, बेशक, यूहन्ना अंततः इस तथ्य की मांग नहीं करता है कि हम किसी तरह इस जीवन में पूर्णता प्राप्त कर सकते हैं क्योंकि वह पहले इसका खंडन करता है।

वह झूठे शिक्षकों को डांटता है, क्योंकि वे पाप रहित होने का दावा करते हैं। यूहन्ना भी यही कहता है कि यदि आप पाप रहित होने का दावा करते हैं, तो आप परमेश्वर को झूठा साबित करते हैं। इसके बजाय, हमारे पास यीशु मसीह के माध्यम से पाप के लिए प्रावधान है।

अगर हम अपने पापों को स्वीकार करते हैं, तो परमेश्वर मसीह के माध्यम से पापों को क्षमा करने के लिए वफादार और न्यायी है। लेकिन अंततः, परमेश्वर के बच्चों के रूप में, मसीह को जानना और परमेश्वर को जानना परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने से प्रदर्शित होता है। अगर हम परमेश्वर से जन्मे हैं, तो फिर से, मुझे लगता है कि यहाँ विचार परिवर्तन का है।

ईश्वर से जन्म लेने का अर्थ है एक ऐसा परिवर्तन जो अनिवार्य रूप से ईश्वर के प्रति आज्ञाकारिता उत्पन्न करता है। जॉन के अनुसार, आज्ञाकारिता में प्रतिक्रिया न देना, इसकी वास्तविकता पर सवाल उठाता है। इसलिए एक बार फिर, परिभाषा के अनुसार, ईश्वर में विश्वास, ईश्वर की संतान बनना और ईश्वर से संबंधित होना, परिभाषा के अनुसार, एक परिवर्तित जीवन की आवश्यकता है।

फिर से, हम पश्चाताप और पापों की क्षमा के विषय को छोड़ना नहीं चाहते हैं और खुद को परमेश्वर की कृपा पर छोड़ देना चाहते हैं और उसकी क्षमा का अनुभव करना चाहते हैं। लेकिन परमेश्वर की इच्छा के अनुसार जीवन जीने के लिए इसे एक बहाने के रूप में उपयोग करना, मुझे लगता है, जेम्स और 1 यूहन्ना और पौलुस में जो हम पढ़ते हैं, उसके विपरीत है। एक अर्थ में, अच्छे उपाय के लिए अंतिम पुस्तक प्रकाशितवाक्य है जो अंत तक जाती है।

उदाहरण के लिए, हम सात कलीसियाओं के संदेशों में देखते हैं, प्रकाशितवाक्य की पुस्तक के संदर्भ में विजय पाने का आह्वान, रोमन साम्राज्य की मूर्तिपूजक व्यवस्था के साथ समझौता करने से इनकार करने से अंततः विजय पाने का आह्वान पूरा होता है। कुछ अन्य रोचक ग्रंथों पर ध्यान दें। अध्याय 12 और पद 17 में, स्त्री के बीज की संतान, अध्याय 12 में, जो मुझे लगता है कि कलीसिया, परमेश्वर के लोगों, यहूदी और गैर-यहूदी को परमेश्वर के लोगों के रूप में प्रतीक है, पद 17 में वर्णित है। तब अजगर स्त्री पर क्रोधित हुआ, और उसकी शेष संतानों के विरुद्ध युद्ध करने चला गया, जो परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते हैं, और यीशु के बारे में अपनी गवाही को दृढ़ता से थामे रहते हैं।

इसलिए, प्रकाशितवाक्य में परमेश्वर के लोगों की पहचान उन लोगों के रूप में की गई है जो जीतते हैं। वे मूर्तिपूजक रोमन शासन और दुनिया के साथ समझौता करने से इनकार करते हैं। इसके बजाय, वे परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करते हैं।

इसलिए, प्रकाशितवाक्य के अंत में, अध्याय 19 और पद 8 में, हम पाते हैं कि परमेश्वर के लोगों को दुल्हन के रूप में वर्णित किया गया है। पद 7 में, मेम्ने का विवाह आ गया है। उसकी दुल्हन, यानी उसके लोग, ने खुद को तैयार कर लिया है।

उसे पहनने के लिए चमकदार और साफ-सुथरा महीन मलमल दिया गया। फिर, लेखक व्याख्या करता है कि महीन मलमल धार्मिक कार्यों, परमेश्वर के पवित्र लोगों के धार्मिक कार्यों का प्रतीक है। इसलिए प्रकाशितवाक्य भी परमेश्वर के लोगों के साथ समाप्त होता है, जो मसीह पर भरोसा करते हैं, लेकिन वे भी जिनके जीवन दुनिया के साथ समझौता करने से इनकार करते हैं, जो परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने की विशेषता रखते हैं, और जो परमेश्वर के लोगों के धार्मिक कार्यों से जुड़े हुए हैं।

इसलिए, नया नियम अंततः किसी ऐसे मसीही को नहीं जानता जो कुछ हद तक परिवर्तित जीवन नहीं जीता है। नया नियम यह अपेक्षा नहीं करता है कि शायद हर कोई इसे उसी हद तक जीएगा, न ही यह कि घाटियाँ और पहाड़ियाँ होंगी, लेकिन अनिवार्य रूप से, नई वाचा के तहत और परमेश्वर के राज्य और नई सृष्टि की परिवर्तित शक्ति के तहत जीने के परिणामस्वरूप, यीशु मसीह से संबंधित होना और पुराने युग में पाप के लिए उसकी मृत्यु में भागीदार होना और नई सृष्टि के पुनरुत्थान जीवन में भागीदार होना अनिवार्य रूप से उस वास्तविकता का फल उत्पन्न करेगा। इसलिए, दिन के अंत में, विश्वास और कार्य संघर्ष में नहीं हैं, लेकिन यीशु मसीह में एक सच्चा विश्वास जो बचाता है वह अनिवार्य रूप से वह है जो राज्य के कार्यों और परमेश्वर की आज्ञाओं के प्रति आज्ञाकारिता में जीए गए जीवन को उत्पन्न करता है।

तो, अब मैं जो करना चाहता हूँ, वह इसका एक उपसमूह है, जो बहुत ही संक्षेप में एक जटिल चर्चा में प्रवेश कर रहा है। मैं सभी मुद्दों को हल करने या उन सभी को उठाने की उम्मीद नहीं कर सकता, और मैं आपके सभी सवालों का जवाब देने और सभी बहस में शामिल होने की उम्मीद नहीं कर सकता, लेकिन बस इस मुद्दे की कुछ व्यापक रेखाओं का पता लगा सकता हूँ कि पुराने नियम का कानून जो कि मूसा का कानून है, इस सब में कैसे फिट बैठता है? जब हम ईसाई आज्ञाकारिता के बारे में सोचते हैं, जब हम नए नियम के संदर्भ में सोचते हैं, मसीह में परमेश्वर के लोगों की आज्ञाकारिता, तो इसमें मूसा का कानून क्या भूमिका निभाता है? क्योंकि जब आप पुराने नियम में वापस जाते हैं, तो मूसा का कानून परमेश्वर के लोगों को अपने लोगों के लिए परमेश्वर की इच्छा के बारे में निर्देश देने में एक प्रमुख भूमिका निभाता है। निर्गमन अध्याय 2 से आरम्भ करते हुए, मैं फिर से कहूँगा कि, जब आप आज्ञाकारिता के संदर्भ में सोचते हैं, तो आप शायद पीछे जा सकते हैं, अदन की वाटिका तक, जहाँ परमेश्वर ने आदम और हव्वा को उसकी आज्ञाओं का पालन करने के लिए कहा, लेकिन अब हम निर्गमन 20 से आरम्भ करते हुए पाते हैं, कि अधिक विशिष्ट रूप से परमेश्वर अपने लोगों के साथ वाचा का सम्बन्ध स्थापित करता है, अब वह अपने लोगों को व्यवस्था देकर उन्हें निर्देश देता है, मूसा के माध्यम से अपने लोगों को व्यवस्था देता है।

तो अब सवाल यह है कि पुराने नियम की व्यवस्था नए नियम में और ईसाई जीवन और आज्ञाकारिता में क्या भूमिका निभाती है? और जैसा कि मैंने कहा, यह एक बहुत ही जटिल विषय है, न ही मैं सभी कठिनाइयों और विवरणों को समझने में सक्षम हूँ, लेकिन यह इतना जटिल है कि इस समय में किसी भी विस्तृत विवरण और पूर्ण संतुष्टि के साथ इसका इलाज करना संभव नहीं है। लेकिन फिर से, हम कुछ व्यापक रूपरेखाएँ रेखांकित करेंगे। फिर से, नई वाचा के शुरुआती बिंदु के साथ, हम पाते हैं कि परमेश्वर, यिर्मयाह 31 और यहेजकेल 36 में, परमेश्वर अपने लोगों के दिलों पर अपना नियम लिखेगा, इसलिए यह मूसा के नियम की एक सतत भूमिका का सुझाव देता है।

और यहां तक कि सुसमाचारों में भी, कभी-कभी सुसमाचार पुराने नियम के कानून की पुष्टि करते हुए दिखाई देते हैं। कभी-कभी, मत्ती और लूका को मूसा के कानून के प्रति अपने दृष्टिकोण में अधिक रूढ़िवादी माना जाता है। मैं इस सवाल का जवाब देकर शुरू करना चाहता हूँ कि परमेश्वर के लोगों के जीवन में मूसा का कानून क्या भूमिका निभाता है? और यह समझना

महत्वपूर्ण है कि हम मूसा के कानून के बारे में बात कर रहे हैं, न कि केवल सामान्य कानून के बारे में।

फिर से, नए नियम के लेखक परमेश्वर के लोगों को कुछ खास काम करने की आज्ञा देने में बहुत खुश हैं। इसलिए, हम इस बारे में बात नहीं कर रहे हैं कि क्या ईसाई किसी कानून या किसी निर्देश के अधीन हैं, बल्कि हम यह सवाल पूछ रहे हैं कि क्या पुराने नियम से मूसा का कानून परमेश्वर के लोगों के जीवन में भूमिका निभाता है और क्या भूमिका निभाता है। मुझे लगता है कि शुरुआती बिंदु मत्ती अध्याय 5 और श्लोक 17 से 20 हैं।

सुसमाचारों में ऐसे कई पाठ हैं जिन्हें हम देख सकते हैं, लेकिन एक बार फिर, हमारे पास उन सभी को देखने का समय नहीं है। लेकिन मैं मूसा के कानून के बारे में यीशु द्वारा स्वयं दिए गए सबसे अधिक कार्यक्रमिक कथनों में से एक को देखना चाहता हूँ। यीशु कहते हैं, फिर से, राज्य के आने और परमेश्वर के राज्य की परिवर्तनकारी शक्ति के संदर्भ में, इस कार्यक्रमिक कथन में, यीशु मत्ती 5 के श्लोक 17 और उसके बाद, 17 से 20 में कहते हैं, यह मत सोचो कि मैं व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं को समाप्त करने आया हूँ।

मैं उन्हें खत्म करने नहीं आया हूँ, बल्कि उन्हें पूरा करने आया हूँ। क्योंकि मैं तुमसे सच कहता हूँ, जब तक आकाश और पृथ्वी टल न जाएँ, तब तक व्यवस्था से एक अक्षर या एक छोटा-सा अक्षर भी नहीं मितेगा, जब तक कि सब कुछ पूरा न हो जाए। और मैं यहीं रुकता हूँ।

मैं जिस बात पर ध्यान केंद्रित करना चाहता हूँ, वह है यीशु द्वारा कानून को पूरा करने की भाषा। जब हम शब्द पूरा करने के बारे में सोचते हैं, तो अक्सर इसका अर्थ यह लगाया जाता है कि यीशु कानून को पूरी तरह से पालन करके, उसे बनाए रखकर और उसकी पुष्टि करके उसे पूरा करता है, और मैं सहमत हूँ कि यह वास्तव में सच है। लेकिन, अध्याय 2 के प्रकाश में, अध्याय 2 के प्रकाश में जहाँ हम यीशु को कानून को पूरा करते हुए देखते हैं, और अध्याय 3 में भी, हम यीशु के जीवन को बार-बार देखते हैं, यहाँ तक कि उनके बचपन में और फिर उनके मंत्रालय की शुरुआत में, हम पाते हैं कि यीशु का जीवन पुराने नियम के ग्रंथों की पूर्ति है।

इसलिए, अपने बचपन के अध्याय 2 में यीशु की गतिविधि, हर चीज़, हर जगह जहाँ वह जाता है, वह सब कुछ यशायाह पैगंबर में कही गई बातों को पूरा करने के लिए हुआ। गलील में यीशु की सेवकाई की शुरुआत में अध्याय 4 और पद 14, पैगंबर यशायाह के माध्यम से कही गई बातों को पूरा करने के लिए हुआ। इसलिए, आपके पास पूर्ति का यह विषय है जहाँ जो चल रहा है वह यीशु का जीवन और सेवकाई पुराने नियम के ग्रंथों की पूर्ति है।

वे उसकी ओर संकेत करते हैं। वे उसके बारे में भविष्यवाणी करते हैं। वे आशा करते हैं।

और वह उनका लक्ष्य है। वह वही है जिसकी ओर उन्होंने इशारा किया था, ताकि, उस अर्थ में, वह उन्हें पूरा करे। और मुझे लगता है कि हमें मैथ्यू 5 में यीशु के कथन को उसी तरह समझना चाहिए।

यीशु व्यवस्था की पूर्ति हैं, इसे बनाए रखने या इसे बनाए रखने और इसकी पुष्टि करने और इसे लागू करने के द्वारा नहीं, बल्कि मुख्य रूप से, यीशु इसे पूरा करते हैं क्योंकि वे वही हैं जिसकी ओर व्यवस्था ने संकेत किया था। वे इसे पूरा करते हैं। यीशु अपनी शिक्षाओं में, विशेष रूप से पर्वत पर उपदेश में, व्यवस्था को पूरा करते हैं; मैं पर्वत पर उपदेश के बाकी हिस्से को लेता हूँ; यीशु की शिक्षा व्यवस्था की पूर्ति है क्योंकि उनकी शिक्षा ही लक्ष्य है।

यीशु का अपना जीवन, सेवकाई और शिक्षाएँ व्यवस्था और भविष्यवक्ताओं के लक्ष्य हैं, जिनकी ओर उन्होंने संकेत किया था, ताकि वह उन्हें पूरा करे। और फिर यीशु आगे बढ़कर कह सकते हैं कि व्यवस्था समाप्त नहीं होगी। इसे नष्ट नहीं किया जाएगा।

जब तक सब कुछ पूरा नहीं हो जाता, तब तक एक भी अंश, एक भी कलम का निशान नहीं मिटेगा। इसलिए, व्यवस्था मिटेगी नहीं, बल्कि यीशु मसीह में इसकी पूर्ति के प्रकाश में इसकी वैधता और स्थायी मूल्य मिलेगा। इसलिए, इसमें निरंतरता और असंततता दोनों हैं।

हाँ, व्यवस्था जारी है। हाँ, व्यवस्था की पुष्टि की गई है। हाँ, व्यवस्था को वैध दिखाया गया है, लेकिन केवल इस बात के प्रकाश में कि यह यीशु मसीह की सेवकाई और शिक्षा में कैसे पूरी होती है।

परमेश्वर का राज्य एक परिवर्तन लाता है ताकि कानून को अंततः यीशु मसीह के संबंध में समझा जाना चाहिए, जो अब राज्य लाता है। और फिर, मैथ्यू 5 से मैथ्यू 7 और अन्य जगहों पर, मुझे लगता है, यह एक प्रदर्शन है कि कैसे यीशु की शिक्षा कानून की पूर्ति है। यह वही है जिसकी ओर इशारा किया गया था।

और कभी-कभी जब आप मैथ्यू 5 के बाकी हिस्से को पढ़ते हैं, जहाँ यीशु कहते हैं, आपने सुना है कि यह कहा गया था, और वह पुराने नियम के एक हिस्से को उद्धृत करेंगे, और फिर वह कहेंगे, लेकिन मैं तुमसे कहता हूँ, मुझे लगता है कि हमें यीशु द्वारा कानून को पूरा करने के विशिष्ट उदाहरण मिलते हैं। कभी-कभी कानून इतना तीव्र हो जाता है कि यह अब हत्या का शारीरिक कृत्य नहीं रह जाता, बल्कि अब यह घृणा बन जाता है। कभी-कभी, इसे अलग कर दिया जाता है ताकि हम अब शपथ न लें।

या, अधिक व्यापक रूप से, यीशु की अपनी मृत्यु बलिदानों को पूरा करती है। लेकिन मुझे लगता है कि यीशु स्पष्ट रूप से सुझाव दे रहे हैं कि अब कानून की व्याख्या और समझ यीशु मसीह के संबंध में की जानी चाहिए, यह कैसे उनकी ओर इशारा करता है, और कैसे वे इसे पूर्णता और पूर्ति तक लाते हैं। और यह दिलचस्प है कि मैथ्यू समाप्त होता है, मैथ्यू का सुसमाचार अध्याय 28 में यीशु द्वारा अपने शिष्यों से यह कहते हुए समाप्त होता है, इसलिए जाओ, सभी राष्ट्रों के लोगों को शिष्य बनाओ, उन्हें पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा के नाम पर बपतिस्मा दो, और उन्हें टोरा या मूसा के कानून का पालन करना सिखाओ।

नहीं, मुझे लगता है कि यह उन्हें वह सब कुछ सिखाना है जो मैंने आपको मैथ्यू की पुस्तक में आज्ञा दी है, जिसमें पहाड़ी उपदेश भी शामिल है। लेकिन फिर से, यीशु ने उन्हें जो आज्ञा दी है

वह पुराने नियम के कानून, मूसा के कानून की पूर्ति से कम नहीं है। अब, हम सुसमाचारों में अन्य ग्रंथों को देख सकते हैं, और हम नए नियम में अन्य ग्रंथों को देख सकते हैं, लेकिन मैं पॉल के पत्रों पर आगे बढ़ना चाहता हूँ।

लेकिन हमें यह ध्यान में रखना चाहिए कि यीशु ने पहले ही उसे बता दिया है कि मसीह के आगमन के साथ उद्धार के इतिहास के चरम पर, यीशु अब पुराने नियम की संपूर्णता को पूरा करता है, जिसमें व्यवस्था भी शामिल है, इसलिए अब वह इसे खत्म करने या अलग करने के लिए नहीं आता है, बल्कि इसे इसकी पूर्णता और पूर्ति तक लाने के लिए आता है। और इसलिए, व्यवस्था को मसीह में पूर्ति के लेंस के माध्यम से समझा जाना चाहिए। अब, पॉलिन साहित्य पर आगे बढ़ते हैं, शायद नए नियम में लेखन के किसी अन्य समूह में हम उतना संबोधित नहीं पाते हैं जितना हम पाते हैं, शायद उन स्थितियों के कारण जिन्हें पॉल संबोधित कर रहे थे, लेकिन हम पॉल के पत्रों के बाहर कहीं और नहीं पाते हैं जहाँ ईसाइयों, परमेश्वर के लोगों के साथ व्यवस्था के संबंध के मुद्दे को पॉल के पत्रों की तरह संबोधित किया गया हो।

सबसे पहले जो बात मैं कहना चाहता हूँ, वह यह है कि मुझे लगता है कि पॉल इस बात को लेकर स्पष्ट हैं कि पुरानी वाचा और उससे संबंधित मूसा के कानून का युग अब मसीह के आगमन के साथ समाप्त हो गया है। मुझे लगता है कि पॉल ने इसके लिए जो सबसे स्पष्ट तर्क दिया है, वह गलातियों के अध्याय 3 और 4 में पाया जाता है। और अगर आपको याद हो, तो गलातियों की पुस्तक में, पॉल गलातिया के चर्चों में गैर-यहूदी ईसाइयों को यह समझाने की कोशिश कर रहा है कि वे यहूदी धर्म के लोगों के आगे न झुकें और मूसा के कानून के अधीन रहें। और इसलिए, उनके तर्क का एक हिस्सा, उनके तर्क के केंद्र में, अध्याय 3 और 4 है, जिसमें इन दो अध्यायों में, पॉल यह तर्क देने जा रहा है कि कानून ने यीशु मसीह में वादे के आने तक, या मसीह के आने तक एक अस्थायी भूमिका निभाई।

यह बात गलातियों के अध्याय 3 और आयत 15 और उसके बाद की आयतों में विशेष रूप से सत्य है, जहाँ पौलुस कई बातों पर तर्क देता है। सबसे पहले, वह कहता है कि अब्राहमिक वाचा के 430 साल बाद आई व्यवस्था और वाचा ने उसे पलटा नहीं। और फिर आयत 23-25 में वह रूपकों की एक श्रृंखला का उपयोग करता है जो व्यवस्था के अस्थायी कार्य पर और अधिक जोर देते हैं।

इसलिए, पौलुस यह प्रदर्शित करता है कि अब्राहम से किए गए वादे अंततः मूसा की वाचा में पूरे नहीं होते, जिसके बारे में संभवतः यहूदीवादी तर्क दे रहे थे, लेकिन अंततः यीशु मसीह के व्यक्तित्व में पूरे होते हैं। इसलिए, मूसा की वाचा अब्राहम के अधीन की गई वाचा को पलटती या उसकी भूमिका पर जोर नहीं देती या उसे मात नहीं देती। इसके बजाय, अब्राहम के साथ की गई वाचा अंततः यीशु मसीह में पूरी होती है।

और पॉल कहते हैं कि यह कानून 430 साल बाद आया। दूसरे शब्दों में, वह पुराने नियम से ऐतिहासिक रूप से तर्क दे रहा है कि मूसा के कानून ने अब्राहम से किए गए वादों और यीशु मसीह में उनकी अंतिम पूर्ति के बीच एक अस्थायी भूमिका निभाई। और आयत 23-25 में, पॉल इसे प्रदर्शित करने के लिए कई रूपकों का उपयोग करता है।

विश्वास के आने से पहले, हम कानून के तहत हिरासत में रखे गए थे। इसलिए, कानून को एक संरक्षक के रूप में देखा जाता है। जब तक आने वाला विश्वास प्रकट नहीं हो जाता, तब तक हम बंद थे।

विश्वास का तात्पर्य उद्धार के नए युग और यीशु मसीह में विश्वास से है। इसलिए, मसीह के आने तक व्यवस्था हमारा संरक्षक थी ताकि हम विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरें। अब जबकि यह विश्वास आ गया है, हम अब संरक्षक के अधीन नहीं हैं।

तो, मसीह यीशु में, अब आप विश्वास के द्वारा परमेश्वर की संतान हैं। तो, पौलुस का तर्क है कि व्यवस्था ने एक अस्थायी भूमिका निभाई, एक संरक्षक, शिक्षक, दाई या बच्चों की देखभाल करने वाले के रूप में। कोई ऐसा व्यक्ति जो बच्चे को तब तक नियंत्रित रखता है जब तक कि बच्चा इतना बड़ा न हो जाए कि वह अपना निर्णय खुद ले सके।

इसलिए, मूसा की व्यवस्था उन चीजों की तरह थी जिसमें उसने परमेश्वर के लोगों को रखा और वादे के आने तक उनकी रक्षा की। विश्वास के वादे और यीशु मसीह के आने तक। और अब जब मसीह आ गया है, तो पौलुस कहता है कि तुम अब व्यवस्था के अधीन नहीं हो।

इसने अपना उद्देश्य और अपनी भूमिका पूरी कर ली है। इसलिए, यीशु मसीह के आने तक व्यवस्था ने एक अस्थायी भूमिका निभाई। अर्थात्, मूसा की व्यवस्था उस पुराने युग से संबंधित है जिसके बारे में पौलुस का मानना है कि वह बीत चुका है और जिससे हमें मुक्ति मिल चुकी है।

गलातियों के अध्याय 1, पद 4 में, जहाँ पौलुस वास्तव में आपको स्थापित करता है, वह पाठकों को अपनी पुस्तक के बाकी हिस्से को पढ़ने के लिए तैयार कर रहा है। जब वह कहता है कि यीशु मसीह ने हमारे पापों के लिए खुद को दे दिया ताकि हमें हमारे परमेश्वर और पिता की इच्छा के अनुसार वर्तमान बुरे युग से बचाया जा सके। इसलिए, यदि मूसा का कानून मुख्य रूप से वर्तमान युग से संबंधित था और अब जबकि मसीह में उद्धार का नया युग आ गया है, तो अध्याय 3 और 4 में पौलुस का तर्क है कि मूसा का कानून उस पुराने युग से संबंधित था, जो अब समाप्त हो गया है क्योंकि यह अब मसीह में अपनी पूर्णता तक पहुँच गया है और इसलिए कानून अब परमेश्वर के लोगों पर बाध्यकारी अधिकार नहीं है।

इसलिए, मसीह के आगमन के साथ, पॉल गलातियों में अध्याय 3 के अंत में अध्याय 4 में कहता है, अब हम वयस्क बच्चे हैं। मुझे नहीं लगता कि वह यह कह रहा है कि व्यवस्था का काल अपरिपक्वता का था और इस्राएली या जो कोई भी व्यवस्था के अधीन था, वह अपरिपक्व था। फिर से, वह केवल उत्तराधिकार की भाषा, पुत्रत्व की भाषा और गोद लेने की भाषा का उपयोग यह प्रदर्शित करने के लिए कर रहा है कि व्यवस्था ने एक अस्थायी कार्य किया।

मसीह के आने पर, अब हम वयस्क बच्चे हैं जिन्हें मूसा के कानून की निगरानी या संरक्षकता की आवश्यकता नहीं है। इसके अलावा, पॉल तर्क देता है कि ईसाइयों ने पहले से ही नई वाचा, पवित्र आत्मा का अनुभव किया है, एक संकेत के रूप में कि वे कानून का पालन किए बिना भगवान के

सच्चे लोग हैं। अध्याय 3 की शुरुआत में, जब वह कहता है, मैं आपसे सिर्फ एक बात सीखना चाहता हूँ: क्या आपने आत्मा प्राप्त की है, तो अनुमान लगाया जाता है कि उन्होंने प्राप्त किया था।

पौलुस उनसे यह नहीं पूछ रहा है कि उनके पास आत्मा है या नहीं। उसका अनुमान है कि उनके पास आत्मा है, पवित्र आत्मा की नई वाचा जिसका वादा पुराने नियम में किया गया था। लेकिन अब वह उनसे पूछ रहा है, क्या तुमने आत्मा को व्यवस्था के कामों से प्राप्त किया या सुसमाचार और जो तुमने सुना उस पर विश्वास करके? क्या तुम आत्मा के द्वारा शुरू करने के बाद इतने मूर्ख हो? अब, क्या तुम शरीर के द्वारा समाप्त करने का प्रयास करना चाहते हो? तो फिर से, मैं पूछता हूँ, क्या परमेश्वर ने तुम्हें अपनी आत्मा दी और तुम्हारे बीच चमत्कार किए व्यवस्था के कामों से या जो तुमने सुना उस पर विश्वास करके? और इसलिए, पौलुस का पूरा मुद्दा यह है कि, फिर से, व्यवस्था ने केवल नई वाचा के वादों की पूर्ति तक, मसीह के आने तक एक अस्थायी भूमिका निभाई।

अब जबकि मसीह आ चुका है, वह पुराना युग जिसमें मूसा की वाचा और व्यवस्था थी, अब समाप्त हो चुका है। इसलिए, व्यवस्था ने एक अस्थायी भूमिका निभाई, और इसके अलावा, पॉल का कहना है कि गलातियों के मसीहियों को पवित्र आत्मा प्राप्त करने में व्यवस्था ने कोई भूमिका नहीं निभाई। तो वे इसके पास वापस क्यों जाना चाहते हैं? अंततः, पॉल अध्याय 3 और पद 23 जैसे ग्रंथों में निष्कर्ष निकालता है कि इस विश्वास के आने से पहले, हम व्यवस्था के अधीन हिरासत में रखे गए थे, आने वाले विश्वास के प्रकट होने तक बंद थे।

और फिर, अध्याय 4 और श्लोक 21 में, वह कहता है, मुझे बताओ तुम कौन व्यवस्था के अधीन रहना चाहते हो। मुझे लगता है कि व्यवस्था के अधीन होने की कल्पना का अर्थ है, इसके अधिकार के अधीन होना, एक बाध्यकारी अधिकार के रूप में व्यवस्था के अधीन होना जो मूसा की वाचा के हिस्से के रूप में हमारे ऊपर है। हम रोमियों के अध्याय 6 और श्लोक 14 में कुछ ऐसा ही देखते हैं, एक पाठ जिसे हम पहले ही पॉल की नैतिकता की शिक्षा और आज्ञाकारिता के संबंध में देख चुके हैं।

लेकिन अध्याय 6 और श्लोक 14 में, पॉल कहते हैं, क्योंकि पाप अब तुम्हारा स्वामी नहीं रहेगा क्योंकि तुम अब व्यवस्था, मूसा की व्यवस्था के अधीन नहीं हो, बल्कि तुम अनुग्रह के अधीन हो। इसलिए, ईसाई अब व्यवस्था के अधीन नहीं हैं। अर्थात्, मूसा की व्यवस्था मूसा की वाचा का हिस्सा थी जो एक अस्थायी व्यवस्था थी जो अब यीशु मसीह के व्यक्तित्व में अपने लक्ष्य और चरमोत्कर्ष पर पहुँच गई है।

इसलिए, अब हम ऐसे समय में नहीं रह रहे हैं जब मूसा का कानून एक बाध्यकारी अधिकार और शक्ति है। और इसलिए रोमियों 6:14 कहता है कि हम अब कानून के अधीन नहीं हैं, बल्कि हम अनुग्रह के अधीन हैं। अब, इस पाठ में, पौलुस दो अलग-अलग तरह के जीवन जीने की बात नहीं कर रहा है। यानी, हम कामों पर भरोसा करने की कोशिश कर रहे हैं या कामों के बिना परमेश्वर के अनुग्रह पर भरोसा करने की कोशिश कर रहे हैं।

फिर से, मुझे लगता है कि पॉल दो अलग-अलग युगों के बारे में बात कर रहा है। पुराना युग, मूसा के अधीन पुरानी वाचा, लेकिन फिर अब नई वाचा, मसीह यीशु के अधीन उद्धार। उद्धार का नया युग अब मसीह में पूरा हो गया है।

इसलिए, मूसा की वाचा यीशु मसीह में और उसके द्वारा आरंभ की गई नई वाचा में पूरी हो गई है। इसलिए, मुझे लगता है कि कुलुस्सियों में पौलुस का तर्क यह है कि यह अब विश्वासियों पर बाध्यकारी शक्ति नहीं है। मूसा की व्यवस्था ने परमेश्वर के छुटकारे के इतिहास के कार्यान्वयन में एक अस्थायी भूमिका निभाई, एक अस्थायी भूमिका जब तक कि वादों की पूर्ति नहीं हो जाती जब तक कि यीशु मसीह में आने वाला उद्धार अपनी पूर्णता तक नहीं पहुँच जाता, इसलिए अब जब मसीह आ गया है और वादा की गई नई वाचा को लाया है और अपनी आत्मा को उंडेला है, तो मूसा की व्यवस्था अब परमेश्वर के लोगों पर बाध्यकारी शक्ति नहीं है।

वे अब इसके अधीन नहीं रहते। यह समझना महत्वपूर्ण है कि मुद्दा यह नहीं है कि मसीहियों को कोई कानून मानने की बाध्यता नहीं है या मूसा का कानून अब कोई भूमिका नहीं निभाता है। लेकिन फिर से, पॉल सुझाव देता है कि मसीही अब पुराने नियम के हिस्से के रूप में मूसा के कानून के अधीन नहीं हैं, जो उनके जीवन पर एक बाध्यकारी अधिकार और एक बाध्यकारी शक्ति है।

मुझे लगता है कि जब हम कुलुस्सियों के अध्याय 2 में जाते हैं तो पॉल कुछ ऐसा ही कहते हैं। कुलुस्सियों के अध्याय 2 में, पॉल ने एक ऐसे समूह को भी संबोधित किया है जिसे कुछ लोगों ने कुलुस्सियों के पाखंड या कुलुस्सियों के त्रुटिपूर्ण या झूठे शिक्षकों का नाम दिया है, आप उन्हें जो भी नाम देना चाहें। मेरी राय में, कुलुस्सियों में पॉल जिस झूठे शिक्षक या विचलित शिक्षा को संबोधित कर रहे हैं, वह शायद एक बार फिर यहूदी धर्म है। इस मामले में, गलातियों के विपरीत, मैं इसे एक ईसाई यहूदी नहीं मानता, बल्कि संभवतः यहूदी धर्म का एक गैर-ईसाई संप्रदाय है, जो शायद सर्वनाशकारी प्रकार के यहूदी धर्म या यहां तक कि कुमरान प्रकार के यहूदी धर्म के समान है।

लेकिन मुद्दा यह है कि वे इस बात पर भी जोर देते हैं कि वास्तव में परमेश्वर के लोग होने का क्या मतलब है, और वे पुराने नियम के कानून के अधीन होने की आवश्यकता पर जोर देते हैं, इसलिए जो कोई भी इसके अनुरूप नहीं है, उसे अयोग्य ठहराते हैं। लेकिन कुलुस्सियों के अध्याय 2 में इसका खंडन करने में पौलुस की भाषा पर ध्यान दें। एक खंड में जहाँ हम पाते हैं कि पौलुस सीधे शिक्षा को संबोधित करता है, वह पद 16 में कहता है, इसलिए किसी को भी आपके खाने या पीने के आधार पर आपका न्याय न करने दें, शायद पुराने नियम और अन्य यहूदी साहित्य में खाद्य कानूनों को दर्शाता है या धार्मिक त्योहार, नए चाँद के उत्सव या सब्त के दिन के संबंध में। सब्त का वह संदर्भ यह पुख्ता करता है कि यह किसी तरह का यहूदी धर्म है।

वास्तव में, त्योहार, नया चाँद और सब्त जैसे वाक्यांश पुराने नियम में, कुमरान पाठ में और यहूदी साहित्य में कई बार आते हैं। लेकिन फिर पॉल ने जो कहा वह दिलचस्प है। ये चीज़ें, यानी धार्मिक त्योहार, नया चाँद, सब्त, भोजन के नियम, खाना-पीना, आने वाली चीज़ों की छाया हैं।

हालाँकि, वास्तविकता अब यीशु मसीह में पाई जाती है। इसलिए, मुझे लगता है कि यह कथन, एक तरह से, कुछ ऐसा ही दर्शाता है जो पॉल ने गलातियों की पुस्तक के अध्याय 3 और 4 में कहा था। व्यवस्था में ये बातें एक छाया के रूप में कार्य करती थीं जो एक बड़ी वास्तविकता की ओर इशारा करती थीं जो मसीह है। ये बातें एक छाया थीं जो अब यीशु मसीह के व्यक्तित्व द्वारा पूरी हुई हैं।

यह इब्रानियों के लेखक द्वारा इस्तेमाल की गई भाषा के लगभग समान है। लेकिन एक बार फिर, पौलुस यह मानता है कि ये बातें अब मसीहियों पर बाध्यकारी नहीं हैं। उन्हें अब परमेश्वर के सच्चे लोगों से संबंधित होने से अयोग्य महसूस नहीं करना चाहिए क्योंकि वे भोजन के नियमों, धार्मिक त्योहारों, नए चाँद और उत्सवों और सब्जियों से संबंधित इन नियमों का पालन नहीं करते हैं क्योंकि ये चीजें अस्थायी छाया के रूप में कार्य करती हैं जो एक बड़ी वास्तविकता की ओर इशारा करती हैं।

अब जबकि वास्तविकता सामने आ चुकी है, उन्हें उन बातों पर वापस जाने की ज़रूरत नहीं है जो परमेश्वर के लोगों पर बाध्यकारी हैं। पौलुस भी आश्चर्य है कि व्यवस्था आज्ञाकारिता की माँग करती है। यह व्यवस्था का पालन करने, वास्तव में उसका पालन करने के सिद्धांत पर आधारित है।

और पॉल का तर्क यह प्रतीत होता है कि कोई भी इसे पूरी तरह से नहीं रख सकता। यदि कोई कानून के अधीन वापस जाना चाहता है, तो यह आज्ञाकारिता के सिद्धांत के अनुसार काम करता है। और इसलिए, कानून आज्ञाकारिता की माँग करता है।

समस्या यह है कि अवज्ञा के कारण, जो कोई भी व्यवस्था के अधीन होता है, वह शाप के अधीन होता है। गलातियों अध्याय 3 और पद 10. क्योंकि जो कोई व्यवस्था के कामों पर भरोसा करता है, वह शाप के अधीन है।

जैसा कि लिखा है, शापित है वह व्यक्ति जो व्यवस्था की पुस्तक में वर्णित सब कुछ करना जारी नहीं रखता। स्पष्ट रूप से, जो कोई भी व्यवस्था पर निर्भर करता है, वह परमेश्वर के सामने धर्मी नहीं ठहराया जा सकता क्योंकि धर्मी लोग विश्वास से जीवित रहेंगे। मुझे लगता है कि पॉल यह सुझाव दे रहा है और मान रहा है कि जो कोई भी औचित्य के लिए व्यवस्था पर निर्भर रहना चाहता है, वह अंततः इसे एक मृत-अंत वाली सड़क पाएगा।

न केवल इसलिए कि यह मसीह में पूरा हुआ है, बल्कि इसलिए भी कि ऐतिहासिक रूप से उद्धार, युग, और मूसा की वाचा के भाग के रूप में व्यवस्था के बाध्यकारी बल का समय समाप्त हो चुका है। लेकिन साथ ही, क्योंकि इसके लिए कार्य की आवश्यकता होती है, इसके लिए आज्ञाकारिता की आवश्यकता होती है। और मुझे लगता है कि यहाँ उनकी धारणा यह है कि पाप के कारण, कोई भी उस आज्ञाकारिता की पेशकश नहीं करता है जिसकी आवश्यकता होती है।

इसके बजाय, वे खुद को एक अभिशाप के अधीन पाते हैं। वे सभी जो व्यवस्था के कामों पर भरोसा करते हैं, अभिशाप के अधीन हैं। अनुमान है कि इसका कारण यह है कि वे इसका उल्लंघन करते हैं।

पाप के कारण, वे इसका पालन नहीं कर सकते। रोमियों 2:23-25 में भी हमें कुछ ऐसा ही देखने को मिलता है। इस अध्याय में पौलुस द्वारा मानवता पर लगाए गए अभियोग में, वह सुझाव देता है कि यहूदी भी व्यवस्था होने के बावजूद दोषी हैं क्योंकि वे इसका पालन करने में विफल रहते हैं।

अब, इसमें एक और विशेषता लाने की जरूरत है, जिस पर चर्चा करने के लिए हमारे पास बहुत समय नहीं है, वह यह है कि जो लोग खुद को वर्गीकृत करते हैं या पॉल के पत्रों को नए दृष्टिकोण से देखते हैं, वे अक्सर कानून को देखते हैं, कानून पर पॉल का प्राथमिक हमला, मुझे नहीं लगता कि इसे हमला कहने के लिए यह सबसे अच्छा शब्द है। लेकिन कानून की पॉल की प्राथमिक आलोचना मुख्य रूप से कानून पर भरोसा करने के मानवीय प्रयासों और ऐसा करने में विफलता, या सिर्फ उद्धार के इतिहास के कारण नहीं है, बल्कि इसलिए है क्योंकि इसने एक अस्थायी भूमिका निभाई है, बल्कि इसलिए कि कानून ने एक पहचान चिह्न के रूप में कार्य किया है। पॉल के मन में मुख्य रूप से यह है कि कानून वह है जो अन्यजातियों को बाहर करता है, ताकि खतना, सब्त और भोजन के नियम वे चीजें हैं जो परमेश्वर के लोगों, यहूदियों को अन्यजातियों से अलग करती हैं।

और इसलिए रोमियों और गलातियों में पॉल जो करने जा रहा है वह गैर-यहूदियों को बाहर करना है, कि यहूदियों ने परमेश्वर के वादों और अब्राहम के वादों को मूसा के कानून के साथ बहुत करीब से जोड़ दिया है, जो गैर-यहूदियों को बाहर करता है। इसलिए, अगर गैर-यहूदी उद्धार में भाग लेना चाहते हैं, तो उन्हें मूसा के कानून को अपने ऊपर लेकर यहूदियों के साथ पहचान करनी चाहिए। अब, इसमें निश्चित रूप से कुछ सच्चाई है। निश्चित रूप से, हम पाते हैं कि गलातियों में पॉल की समस्या का एक हिस्सा विशेष रूप से यह है कि कानून ने यहूदियों को गैर-यहूदियों से अलग कर दिया।

यहूदी मूसा के कानून की मांग करके अन्यजातियों को बाहर कर रहे हैं। लेकिन निश्चित रूप से, यह कहानी का केवल एक हिस्सा है। मुझे लगता है कि जब हम गलातियों और रोमियों को पढ़ते हैं, तो हम पाते हैं कि पॉल कानून की आलोचना इसलिए भी करता है क्योंकि उद्धार का नया युग अब मसीह में पूरा हो चुका है, लेकिन इसलिए भी क्योंकि कोई भी इसका पालन नहीं कर सकता।

गलातियों अध्याय 3, पद 12. पाप की समस्या का अर्थ है कि यदि कोई व्यक्ति व्यवस्था पर निर्भर रहना चाहता है, तो हम पाते हैं कि कोई भी व्यक्ति उद्धार में भाग लेने के लिए आवश्यक सीमा तक उसका पालन नहीं कर सकता है। इसलिए मुझे लगता है कि कुल मिलाकर, इस मुद्दे का यह दर्दनाक संक्षिप्त सर्वेक्षण और इनमें से कुछ ग्रंथ यह सुझाव देते हैं कि पॉल और अन्य नए नियम के लेखक, लेकिन विशेष रूप से पॉल, व्यवस्था को परमेश्वर के उद्धार के इतिहास के कार्यान्वयन में एक अस्थायी भूमिका निभाते हुए देखते हैं और इसलिए, व्यवस्था का बाध्यकारी अधिकार, पुराने युग में व्यवस्था का कार्य अब अपने लक्ष्य और यीशु मसीह के व्यक्तित्व में अपनी पूर्ति तक पहुँच गया है, ताकि व्यवस्था अब परमेश्वर के लोगों पर बाध्यकारी अधिकार न रहे।

इसलिए, पौलुस कह सकता है कि हम अब व्यवस्था के अधीन नहीं हैं। अब फिर से, इसका मतलब यह नहीं है कि हम किसी भी व्यवस्था या किसी भी आज्ञाकारिता से मुक्त हैं, बल्कि यह कि मूसा की व्यवस्था अब पुराने नियम के उद्धार के हिस्से के रूप में बाध्यकारी अधिकार और शक्ति नहीं है। अब, यह अभी भी सवाल उठाता है कि व्यवस्था, यानी मूसा की व्यवस्था, परमेश्वर के लोगों के जीवन में क्या भूमिका निभाती है। क्या हमें मूसा की व्यवस्था पढ़नी चाहिए और क्या हमें उसका पालन करने और उसका पालन करने का प्रयास करना चाहिए? मैं बस कुछ टिप्पणियाँ करना चाहता हूँ।

फिर से, इस बारे में हम बहुत कुछ कह सकते हैं, लेकिन सबसे पहले, पहली बात यह है कि हमें यह समझने की ज़रूरत है कि कानून हम पर लागू होता है और कानून अभी भी, एक अर्थ में, कानून अभी भी परमेश्वर के लोगों से बात करता है, लेकिन केवल इस बात के प्रकाश में कि यह यीशु मसीह में कैसे पूरा हुआ है। इसलिए, कानून का कोई भी हिस्सा परमेश्वर के लोगों पर लागू नहीं होता है, सिवाय इसके कि यह यीशु मसीह में कैसे पूरा हुआ है। तो अब हम पाते हैं कि, फिर से, यह दिलचस्प है जब आप विशेष रूप से पॉल के पत्रों को पढ़ते हैं, लेकिन मुझे लगता है कि कहीं और, कि कानून अंततः नई वाचा पवित्र आत्मा की शक्ति के तहत जीवन जीने और हमारे अंतिम नैतिक मानदंड के रूप में स्वयं यीशु मसीह के उदाहरण और शिक्षा का पालन करने से पूरा होता है।

वास्तव में, जैसा कि पॉल ने गलातियों के अध्याय 6 और पद 2 में कहा है, अब हम मसीह के कानून के अधीन हैं। यह उस बात के अनुरूप है जो हमने पाया कि यीशु ने मत्ती अध्याय 5 में भी कहा था। हाँ, मूसा का कानून अभी भी हम पर लागू होता है, लेकिन अब केवल इस बात के प्रकाश में कि यह यीशु मसीह में कैसे पूरा हुआ है। यह हम पर लागू होता है; जब इसे यीशु मसीह के प्रकाश में और उसके लेंस के माध्यम से देखा और व्याख्या किया जाता है, तो इसकी वैधता स्थायी होती है।

लेकिन फिर भी, एक बार फिर, पौलुस अभी भी आश्चर्य है कि हमारी आज्ञाकारिता का अंतिम स्रोत मूसा की व्यवस्था के अधीन होने से नहीं आता है, बल्कि हमारी आज्ञाकारिता का अंतिम स्रोत पवित्र आत्मा की शक्ति के अधीन जीवन जीना है जो नई वाचा की पूर्ति में हम पर उंडेला गया है और यीशु की अपनी शिक्षाओं और उदाहरणों का पालन करना है। लेकिन दूसरा, यह दिलचस्प है कि पौलुस पुराने नियम की व्यवस्था, मूसा की व्यवस्था से कई पुराने नियम के अंशों को उद्धृत करता है या कम से कम उनका संकेत देता है या उनसे कुछ लेता हुआ प्रतीत होता है। इफिसियों के अध्याय 6 और पद 2 में पौलुस ने वास्तव में एक पाठ का उद्धरण कहाँ दिया है, इसका एक स्पष्ट उदाहरण मिलता है। इफिसियों के अध्याय 6 और पद 2 में पौलुस कहता है, हे बच्चों, प्रभु में अपने माता-पिता की आज्ञा मानो, क्योंकि यह उचित है।

अपने पिता और माता का आदर करो। और फिर पौलुस आगे कहता है, "पहली आज्ञा कौन सी है जिसके साथ प्रतिज्ञा है? और फिर, ताकि तुम्हारा भला हो और तुम धरती पर लंबी उम्र का आनंद उठा सको। फिर से, पौलुस पुराने नियम के कानून, मूसा के कानून से उद्धरण देता है।

फिर से, मैं इस बारे में विस्तार से नहीं बताना चाहता कि इसे कैसे समझा जाए, खास तौर पर उस वाक्यांश को, ताकि यह आपके और पृथ्वी के लिए अच्छा हो। लेकिन मुख्य बात यह है कि, पॉल ने यह कहने के बाद भी कि आप अब कानून के अधीन नहीं हैं, वह अभी भी पुराने नियम के मूसा के कानून के एक हिस्से को उद्धृत करने के लिए स्वतंत्र महसूस करता है, जो स्पष्ट रूप से अभी भी ईश्वर के लोगों के लिए शिक्षाप्रद है, उन पर अभी भी बाध्यकारी है। अन्य अंश जो कम से कम मूसा के कानून में पुराने नियम के पाठ का संकेत दे सकते हैं या मान सकते हैं या उससे आकर्षित हो सकते हैं, वे रोमियों के अध्याय 13 और 8 से 10 के उदाहरण होंगे।

अध्याय 13, एक दूसरे से प्रेम करने के ऋण को छोड़कर कोई ऋण बकाया न रहे क्योंकि जो कोई दूसरों से प्रेम करता है, उसने व्यवस्था को पूरा किया है। आज़ाएँ, तुम व्यभिचार नहीं करोगे, तुम हत्या नहीं करोगे, तुम चोरी नहीं करोगे, तुम लालच नहीं करोगे, और जो भी अन्य आज़ाएँ हो सकती हैं, वे इस एक आज्ञा में समाहित हैं। अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करो।

इसलिए, पॉल को लगता है कि मूसा का नियम या एक दूसरे से प्रेम करने का आदेश भी साथ लेकर चलता है और अन्य आदेशों को सारांशित करता है ताकि वे अभी भी व्यभिचार न करने, हत्या न करने, चोरी न करने, लालच न करने के लिए जिम्मेदार हों, लेकिन वे इसे पूरा करेंगे यदि वे इस नियम का पालन करते हैं कि अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करो। पहला कुरिन्थियों अध्याय 5 और श्लोक 10 और 11। हम पॉल के अन्य ग्रंथों की ओर इशारा कर सकते हैं जहाँ वह व्यभिचार और यौन अनैतिकता के बारे में बात करता है या मना करता है, जहाँ पॉल इफिसियों अध्याय 4 में चोरी करने से मना करता है, शायद पुराने नियम के नियम को मानकर या उससे प्रेरणा लेकर।

1 कुरिन्थियों 1 अध्याय 10 और 11 की आयतें। परन्तु अब मैं तुम्हें लिखता हूँ, कि जो कोई अपने आप को भाई या बहिन कहलाए, पर व्यभिचारी या लोभी या मूर्तिपूजक या बदनाम करनेवाला या पियक्कड़ या ठग हो, उसके साथ संगति न करना। ऐसे लोगों के साथ खाना भी न खाना।

दरअसल, फर्स्ट कोरिन्थियन 5 से 7 में पुराने नियम के इस्तेमाल पर ब्रायन रॉसनर द्वारा लिखा गया एक मोनोग्राफ यह दर्शाता है कि पॉल अक्सर फर्स्ट कोरिन्थियन 5 से 7 में अपने पाठकों को नैतिक उपदेश देने के लिए पुराने नियम के नियमों से निर्देश लेता है। इसलिए दिलचस्प बात यह है कि पॉल कई बिंदुओं पर कई पुराने नियम की आज्ञाओं की नैतिक शिक्षाओं का हवाला देता है। इसलिए, मुझे लगता है कि इसे देखने का तरीका यह है कि पॉल के लिए कानून और नए नियम के लेखकों के लिए, हम कह सकते हैं कि कानून अभी भी काम करता है, कानून से मेरा मतलब है कि मूसा का कानून, अभी भी एक मार्गदर्शक के रूप में काम करता है और परमेश्वर के लोगों को निर्देश देता है। यह एक मार्गदर्शक है जो परमेश्वर के लोगों को परमेश्वर के चरित्र और परमेश्वर को अपने लोगों से क्या चाहिए, के बारे में निर्देश देता है।

इसलिए, हम अक्सर पाते हैं कि कुछ नैतिक शिक्षाएँ, मैं तीन गुना पर वापस नहीं जाना चाहता, हम कानून को नैतिक कानून, औपचारिक कानून और नागरिक कानून में विभाजित कर सकते हैं, लेकिन निश्चित रूप से, हम पाते हैं कि पूरे कानून में वह नैतिक शिक्षा है जिसे अब पॉल उठाता है और मसीह के कानून में शामिल करता है, गलातियों अध्याय 1 और पद 2। इसलिए, गलातियों

अध्याय 1 और पद 2 को फिर से देखने के लिए, मुझे खेद है, गलातियों अध्याय 6 और 1 और 2, पॉल कहते हैं, भाइयों और बहनों, यदि कोई पाप में पकड़ा जाता है, तो आप जो आत्मा से जीते हैं, उसे धीरे से बहाल करना चाहिए। लेकिन अपने आप को सावधान रखें, नहीं तो आप भी परीक्षा में पड़ सकते हैं, एक दूसरे का बोझ उठा सकते हैं, और इस तरह, आप मसीह के कानून को पूरा करेंगे। तो जाहिर है, पॉल कहते हैं कि हम अभी भी मसीह के कानून के लिए जिम्मेदार हैं, जिसे मैं यीशु के अपने उदाहरणों, यीशु की शिक्षाओं और उनके निर्देशों का उल्लेख करने का पॉल का तरीका मानता हूँ, लेकिन यह भी कि कैसे यीशु अब कानून को उसकी पूर्ति में लाता है।

इसमें पुराने नियम के कानून की कुछ नैतिक शिक्षाएँ और आवश्यकताएँ शामिल होंगी जिन्हें अब यीशु मसीह में शामिल किया गया है। फिर से, मेरे लिए यह सुझाव देने से बहुत अलग है कि मूसा के कानून की संपूर्णता उस रूप में हम पर बाध्यकारी है जिसे हम पुराने नियम में पाते हैं। लेकिन इसके बजाय, अब हम पूछते हैं, मसीह ने इसे कैसे पूरा किया है? और कानून हमें क्या बताता है? यह हमें मार्गदर्शन देने और हमें परमेश्वर के चरित्र और उसके लोगों से उसकी अपेक्षाओं के बारे में निर्देश देने के लिए कैसे कार्य करता है? ऐसा करने के तरीकों में से एक, बस एक तरह से, और यह इसके बारे में जाने का एकमात्र तरीका नहीं है, लेकिन मुझे लगता है कि इस दृष्टिकोण से निपटने के तरीकों में से एक यह है कि किसी भी कानून से पूछें कि इस कानून का असली इरादा क्या है।

इसलिए, उदाहरण के लिए, जब आप पुराने नियम में बीनने के कुछ नियमों को देखते हैं, जब हम मूसा के कानून को अपने ऊपर लागू करने के बारे में सोचते हैं, तो हम पूछ सकते हैं कि इस कानून का असली उद्देश्य क्या है? मैं बीनने के उन नियमों को देखता हूँ, जिनके अनुसार किसानों को अपनी फसल को खेत के किनारे तक नहीं काटना चाहिए, बल्कि उसमें से कुछ हिस्सा छोड़ देना चाहिए। इसका उद्देश्य क्या था, या इसका उद्देश्य क्या था? चूँकि मैं किसान नहीं हूँ और चूँकि हमारे आधुनिक समय में हम जो फसलें उगाते हैं, उनमें से अधिकांश वैसे भी खाने योग्य नहीं हैं, कम से कम जिस रूप में वे उगती हैं, वे मानव उपभोग के लिए उपयुक्त नहीं हैं, और मेरे जानने वाले अधिकांश ईसाई किसान सब कुछ काट लेते हैं और वे मकई की कतारें नहीं छोड़ते, तो क्या वे मूसा के कानून का उल्लंघन कर रहे हैं? लेकिन जब आप पूछते हैं कि इसका असली उद्देश्य क्या है, तो हम पाते हैं कि इसका उद्देश्य गरीबों को भोजन उपलब्ध कराना था। यह वह तरीका है जिससे गरीबों को भोजन उपलब्ध कराया जाना था।

तो, अगर यही असली इरादा है, तो मैं पूछ सकता हूँ, फिर मैं इसे किस तरह से लागू करूँ? फिर, मैं किन तरीकों से गरीबों की मदद करूँ? मैं किन तरीकों से गरीबों तक पहुँचूँ? शायद यह पूरा नहीं होने वाला है; लोग सिर्फ़ खेतों से होकर नहीं चलते और मकई के डंठलों से खाना नहीं खाते या कुछ और। तो, मैं पूछ सकता हूँ, लेकिन मैं किन तरीकों से गरीबों की मदद करने के लिए जिम्मेदार हूँ? कुछ व्यावहारिक तरीके क्या हैं जिनसे मैं वास्तव में गरीबों को भोजन, आश्रय और कपड़े प्रदान कर सकता हूँ? यही कानून का असली इरादा लगता है। तो कम से कम एक बात तो पूछनी ही चाहिए कि इस कानून का इरादा क्या है और फिर मैं इसे कैसे पूरा कर सकता हूँ, मैं इसे यीशु मसीह में कैसे पूरा किया जाता है, उसके प्रकाश में कैसे पूरा कर सकता हूँ।

लेकिन अंततः, मुझे लगता है कि हम पॉल के पत्रों में पाते हैं कि मसीह और उसकी आज्ञाओं का पालन करना हमारा नैतिक मार्गदर्शन है और पवित्र आत्मा की शक्ति के तहत जीवन जीना है। इसलिए, गलातियों के अध्याय 5 में, पवित्र आत्मा के अधीन जिया गया जीवन व्यवस्था की पूर्ति है। रोमियों के अध्याय 8 और पद 4 में भी पॉल कहते हैं, रोमियों 8 और पद 4 में वे कहते हैं, ताकि व्यवस्था की धार्मिक आवश्यकता, मूसा की व्यवस्था, हम में पूरी तरह से पूरी हो सके जो शरीर के अनुसार नहीं बल्कि आत्मा के अनुसार जीते हैं।

दूसरे शब्दों में, जैसा कि पौलुस कह रहा है, जब हम नई वाचा की आत्मा के मार्गदर्शन में और यीशु मसीह की आज्ञाकारिता में जीवन जीते हैं, तो आत्मा के अधीन जीवन जीना वास्तव में व्यवस्था को पूरा करता है। यह वही है जो व्यवस्था का इरादा था और जिसकी ओर इशारा किया गया था। और हम इसे खुद को फिर से व्यवस्था की गुलामी और उसके अधिकार के अधीन करके नहीं, बल्कि नई वाचा की पवित्र आत्मा में जीवन जीकर पूरा करते हैं।

और पवित्र आत्मा के अधीन जीवन जीने से ही हमारे अंदर व्यवस्था पूरी होती है। लेकिन मैं यह मानता हूँ कि नए नियम में, आज्ञाएँ और अनिवार्यताएँ अभी भी ज़रूरी हैं और हमें मार्गदर्शन देने के लिए ज़रूरी हैं कि हमें दिखाया जाए कि उस तरह का जीवन कैसा दिखता है।

यह डॉ. डेव मैथ्यूसन द्वारा नए नियम के धर्मशास्त्र पर अपने व्याख्यान श्रृंखला में दिया गया है। यह सत्र 29 है, ईसाई और पुराने नियम का नियम।